अलबेले
उत्सव और मेले

डॉ. प्रभात कुमार सिंघल
(*पूर्व जॉइंट डायरेक्टर*)
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग
राजस्थान सरकार, कोटा, राजस्थान, भारत

ALABELE UTSAV AUR MELE

Copyright © : Dr. Prabhat Kumar Singhal
Publishing Rights Ⓟ : VSRD Academic Publishing
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

ISBN-13: 978-93-87610-86-6
FIRST EDITION, OCTOBER 2023, INDIA

Printed & Published by:
VSRD Academic Publishing
(*A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.*)

Disclaimer: The author(s) are solely responsible for the contents compiled in this book. The publishers or its staff do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the Authors or Publishers to avoid discrepancies in future.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photo-copying, recording or otherwise, without the prior permission of the Publishers & Author.

Printed & Bound in India

VSRD ACADEMIC PUBLISHING
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

REGISTERED OFFICE
154, Tezabmill Campus, Anwarganj, KANPUR – 208003 (UP) (IN)
Mb: 98999 36803, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

MARKETING OFFICE
340, FF, Adarsh Nagar, Oshiwara, Andheri(W), MUMBAI–400053 (MH)(IN)
Mb: 99561 27040, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

अख्तर खान 'अकेला'
एडवोकेट, लेखक, पत्रकार

प्राक्कथन

हमारा देश भारत प्यार, मोहब्बत, खेलकूद, त्यौहार और उत्सवों का देश है । यहां रोज मर्रा कोई न कोई त्यौहार, कोई ना कोई उत्सव, मेला, सांस्कृतिक, लोक सांस्कृतिक कार्यक्रम होते रहते हैं। विश्व पर्यटन स्तर पर भारत के उत्सव, मेले, स्मारकों, पर्यटन स्थलों की अलग ही पहचान है जो दूर–दराज के विदेशी पर्यटकों को भारत में खींच लाती है। पर्यटक भारत में आकर इन उत्सवों मेलों में शामिल होकर रोज मर्रा की जिंदगी की थकान कम कर भरपूर मनोरंजन करते हैं। भारत के उत्सव, मेलों की महत्ता बताने के लिए ही राजस्थान के विख्यात पर्यटन लेखक डॉ. प्रभात कुमार सिंघल ने प्रस्तुत कृति को हैंड बुक के रूप में लिखा है। राजस्थान के सूचना और जनसंपर्क विभाग में संयुक्त निदेशक पद से रिटायर होने के बाद पर्यटकों को आकर्षित करने, देश में कौमी एकता का पैगाम देने के लिए लेखन कार्य कर रहे हैं। इनकी कई पुस्तकें इसी उद्देश्य से नियमित प्रकाशित होकर, बहुउपयोगी साबित हुई हैं।

यूँ तो भारत के हर राज्य और हर जिले में हर रोज मेले तथा उत्सव होते हैं और इनकी सूची व्यापक है लेकिन देश के 21 राज्यों में लगभग 82 उत्सव ऐसे हैं जिन्होंने विस्तृत रूप से अलग–अलग राज्यों की पहचान बनाई हैं। इनके सांस्कृतिक महत्व के साथ मेले और उत्सवों को 'अलबेले उत्सव और मेले' पुस्तक में

शामिल किया गया है। रंगबिरंगा राजस्थान इन उत्सवों में सिरमोर है इसीलिए राज्य में पर्यटन उत्सवों और मेलों के विकास के लिए मेला विकास प्राधिकरण का गठन किया गया है। अन्य राज्यों में भी सरकार की तरफ से मेलों और उत्सवों के आयोजन में मदद होती है और वहां की प्रांतीय सरकार काफी ध्यान दे रही हैं।

देश भर में रावण दहन के बाद लगभग हर जिले में मेले लगते हैं लेकिन देश में कोटा, कुल्लू और मैसूर के दशहरा मेलें सबसे अधिक विख्यात हैं। इनमें हर भाषा और हर संस्कृति से जुड़े कार्य्रकम होते हैं। कोटा के मेले में देश भर के व्यापारी दो हफ्ते से भी ज्यादा का वक्त एक विशेष मेला स्थल पर रूक कर मेले में शामिल होते हैं, जिनकी दुकानें, झूले, सर्कस, मनोरजंक साधन, रात–रात भर चलते हैं। कोटा में तो मेले स्थल को स्थाई रूप से प्रगति मैदान की तरह से एक नया रूप दे दिया गया है। देश भर में धार्मिक पर्यटन उत्सव के रूप में हरिद्वार, नासिक, उज्जैन और इलाहबाद में आयोजित कुम्भ और महाकुंभ के मेले मशहूर हैं, जिनमें लाखों लोग शामिल होते हैं। महाराष्ट्र में गणेश उत्सव, उड़ीसा में जगन्नाथपुरी रथ यात्रा, पश्चिमी बंगाल का दुर्गा पूजा, बिहार का छट पूजा उत्सव का अपना विशेष महत्व है। राजस्थान के अजमेर में ख्वाजा साहब के उर्स के वक्त जायरीनों के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मेले का माहौल होता है और इसी जिले के पुष्कर में देश भर के एक मात्र ब्रहम्मा मंदिर का पुष्कर मेला अपने आप में महत्वपूर्ण होता है ।

इस कृति में लेखक ने किस राज्य के किस जिले में कौन–कौन से प्रमुख और विख्यात मेले, उत्सव आयोजित होते हैं का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि इनमें शामिल होने की इच्छा रखने वालों को समूर्ण जानकारी मिल जाए। देश वासियों सहित विदेश से भारत आकर, उत्सव और मेलों का आनंद लेने के शौकीन पर्यटकों के लिए यह पुस्तक एक बहुउपयोगी मार्गदर्शिका बन गई है जो किसी गाइड से कम नहीं है।

इस पुस्तक में भारत की धर्म, संस्कृति, कौमी एकता कार्यक्रमों को भी एक साथ समेट कर गंगा जमुनी संस्कृति का महत्व बताने का

प्रयास किया है। आदिकाल से चले आ रहे यह मेले और उत्सव किसी भी शासक के कार्यकाल में बंद नहीं हुए । शासक कोई भी रहा हो किसी भी धर्म का हो इन मेलों और उत्सवों के आयोजन में हर शासक ने बिना किसी धार्मिक भेदभाव के महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन उत्सव और मेलों के आयोजन में आधुनिक युग के चलते परिवर्तन भी हुए है और व्यस्थाओं में सुधार भी होते रहे हैं ।

पुस्तक में खासतौर पर भारत के पर्यटन उत्सव आंध्रप्रदेश में काकीनाडा बीच उत्सव, अंडमान निकोबार में रंगीन द्वीप पर्यटन उत्सव, बिहार में सोनपुर पशु मेला, छट पूजा उत्सव, गोवा में कार्निवाल, नया वर्ष उत्सव, गुजरात में मांडवी बीच उत्सव, तीथल बीच पर्यटन उत्सव, अहमदाबाद का अंतर्राष्ट्रीय पतंग महोत्सव को शामिल किया गया है। हरियाणा में सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प उत्सव, अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव कुरुक्षेत्र, पिंजौर हेरिटेज फेस्टिवल, हिमाचलप्रदेश में कुल्लू का दशहरा, आइस स्केटिंग उत्सव शिमला, अंतर्राष्ट्रीय हिमालियन उत्सव मैक्लोडगंज, ग्रीष्मोत्सव शिमला, जम्मू कश्मीर में केसर और हाउस बोट उत्सव श्रीनगर, ट्यूलिप फेस्टिवल श्रीनगर, गुलमर्ग शरद उत्सव, कर्नाटक में हम्पी उत्सव, मैसूर का दशहरा, कुम्भ के मेले का उत्सव के रूप में हरिद्वार, उज्जैन, नासिक, इलाहबाद में बडे आयोजन, लद्दाख में लद्दाख उत्सव, खुबानी उत्सव (खुबानी फल), हेमिस उत्सव, मध्यप्रदेश में खजुराहो उत्सव, तानसेन समारोह ग्वालियर, कालीदास समारोह इंदौर, लोकरंग उत्सव भोपाल, महाराष्ट्र में एलिफेंटा उत्सव, एलोरा–अजंता उत्सव, गणेश उत्सव, चीकू उत्सव दाहनू, कछुआ फेस्टिवल वेल्स, मणिपुर में,संगई पर्यटन उत्सव, नागालैंड में हार्निबिल उत्सव, ओडिशा में कोणार्क उत्सव, जगन्नाथपुरी रथ यात्रा उत्सव, पुरी बीच उत्सव, कलिंग महोत्सव, धौली, आदिवासी मेला भुवनेश्वर, राजरानी संगीत महोत्सव और पश्चिम बंगाल में गंगा सागर मेला, दुर्गा पूजा उत्सव कृति में शामिल हैं।

राजस्थान के मरु उत्सव जैसलमेर, पुष्कर मेला, ख्वाजा साहब का उर्स अजमेर, चंद्रभागा मेला झालरापाटन, बूंदी उत्सव, मत्स्य उत्सव अलवर, कुंभलगढ़ उत्सव राजसमंद, रणकपुर उत्सव पाली, शरद

उत्सव–ग्रीष्म उत्सव माउंट आबू, अंतर्राष्ट्रीय पतंग उत्सव जयपुर, ऊंट उत्सव बीकानेर, नागौर मेला नागौर, बेणेश्वर मेला डूंगरपुर, कोलायत मेला बीकानेर, मारवाड़ उत्सव जोधपुर, तीज उत्सव जयपुर–बूंदी, दशहरा मेला कोटा, गलियाकोट उर्स डूंगरपुर, मोमासर उत्सव बीकानेर, आभानेरी उत्सव दौसा, रामदेवरा मेला, जैसलमेर उत्सवों को शामिल किया गया है। इसी प्रकार तमिलनाडु में ममलपुरम उत्सव, नाट्यांजली उत्सव, त्रिपुरा में नीर महल उत्सव, ऑरेंज एंड टूरिज्म फेस्टिवल उत्तरप्रदेश में ताज उत्सव आगरा, रंगोत्सव मथुरा, गंगा महोत्सव वाराणसी, दीपोत्सव अयोध्या, नौचंदी मेला मेरठ, अवध उत्सव लखनऊ सहित कुल 22 राज्यों के 82 उत्सवों की जानकारी पर आधारित है यह पुस्तक।

उल्लेखनीय है कि हमारे उत्सव और मेले, संगीत, नाट्य धार्मिक पौराणिक प्रसंगों पर आधारित होने के साथ–साथ स्थानीय पशु पक्षियों, फलों और अन्य स्थानीय विशेषताओं के आधार पर आयोजित होते हैं। इनके आयोजन का मुख्य उद्देश्य पर्यटन को बढ़ावा देना है। इनके आयोजनों से पर्यटन का विकास तो हुआ ही साथ ही हस्तशिल्पियों को बढ़ावा मिला और विदेशी मुद्रा की आय भी बढ़ी। स्थानीय कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए मंच मिला और प्रोत्साहन से उन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की। कई उत्सव शनैः–शनैः क्षेत्रीयता से निकल कर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के हो गए। राज्यों की संस्कृति का प्रचार और खेलों को प्रोत्साहन मिला। विभिन्न प्रतियोगिताओं से बच्चों और युवाओं का मानसिक विकास और मनोरंजन होता है। उत्सवों में विदेशियों की भागीदारी निरंतर बढ़ती गई और कुछ उत्सवों में विदेशी कलाकार भी भाग लेने लगे हैं। स्वस्थ्य मनोरंजन, मानसिक शांति, तनाव से मुक्ति और सभी वर्गों के लोगों द्वारा शामिल होने से सामाजिक मेलमिलाप और आपसी सद्भाव में वृद्धि होती है। मेले सांप्रदायिक सद्भाव और कौमी एकता को मजबूत करते हैं। एक दूसरे के धर्म के प्रति सम्मान की भावना का विकास होता है।

देश के विभिन्न राज्यों के ऐतिहासिक, धार्मिक, पर्यटन उत्सवों को उनके आयोजन की महत्ता के साथ गागर में सागर भरते हुए विद्वान

लेखक ने तथ्यपरक जानकारी देने का प्रयास किया है। पुस्तक की भाषा सरल, सहज और बोधगम्य है। पर्यटन पर आधारित लेखक की यह कृति पर्यटकों के लिए तो मार्गदर्शक बनेगी ही साथ ही शोधार्थियों के लिए भी उपयोगी होगी ऐसी आशा करता हूं। मैं आभारी हूं कि पुस्तक की भूमिका लिखने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ। लेखक को उनके श्रम साध्य कार्य के लिए बधाई देते हुए पुस्तक की सफलता के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

अख्तर खान अकेला

2–थ–15, रशिदा मंजिल,मेन रोड,विज्ञान नगर,
कोटा (राजस्थान)
मोबाइल––9829086339
कोटा राजस्थान

लेखकीय

हमारे देश में सदियों से सभी धर्मो के लोग भाईचारे की भावना से भारतीय लोग स्वभाव से ही उत्सव प्रिय हैं। उत्सव प्रियता सदियों से भारतवासियों की रग–रग में समाई है। अवसर चाहे पौराणिक हो, धार्मिक, सामाजिक, मौसमी या हो पर्वों और मेलों का, भारतवासियों का मन उत्सव को मनाने को लेकर उमंगों से भर उठता है। विभिन्न संस्कृति में रंगे उत्सवों को मनाने की यही परंपरा विभिन्नता में एकता की विशेषता बन जाती हैं। यही उत्सव संस्कृति पूरे देश और समाज में आपसी सद्भाव और सामाजिक समरसता बनाए रखने का बड़ा माध्यम बन जाती है ।

यूं तो पूरी दुनिया में ही उत्सवों का बड़ा महत्व है पर भारत की बात कुछ और ही है। विभिन्न जातियों और धर्मों की अपनी उत्सव परंपराएं जितनी रंग बिरंगी हैं उतनी ही विविधतापूर्ण भी हैं। इन अवसरों पर उनकी अपनी–अपनी वेशभूषा, श्रंगार रीति, नृत्य–संगीत और सामुदायिक परम्पराओं आदि में एक सम्पूर्ण संस्कृति के दर्शन होते हैं। भारतीय पर्व और उत्सव देश की अमूल्य सांस्कृतिक निधियां है। यह निधियां न केवल सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित हो कर संरक्षित होती हैं, वरन बाहरी दुनिया के लोगों के लिए भी आकर्षण का प्रबल केंद्र बन गई हैं। पौराणिक समय से नदियों को पवित्र और मोक्षदायनी मान कर स्नान करना, उगते सूर्य को जल अर्पित करना, तुलसी, पीपल, बड़, आदि वृक्षों का पूजन, धार्मिक कथाओं का वाचन–श्रवण करना जैसी परंपराएं और इनसे जुड़े पर्व और उत्सव आज भी अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं।

भव्य कथाओं के आयोजन, राम की रावण पर विजय के कथानक पर पूरे देश में दशहरा मेला, राम के चौदह बरस के बनवास के बाद अयोध्या लौटने की खुशी में प्रचलित दीपावली, भाई–बहन के अटूट स्नेह और बहन की रक्षा के वचन से जुड़ा रक्षाबंधन, सुहाग की दीर्घायु की कामना से जुड़ा करवाचौथ और गणगौर, संतान की मंगल कामना से जुड़ा होई अष्टमी, कृष्ण जन्म से जुड़ा कृष्ण

जन्माष्टमी, प्रह्लाद और होलिका प्रसंग से जुड़ा होली, नए वर्ष के आगमन और कृषि से जुड़ा मकर संक्रांति, दुर्गा माता की महिमा से जुडा साल में दो बार नवरात्रा, मौसमी पर्व तीज, बसंत पंचमी, महाशिवरात्रि, गणेश चतुर्थी, बैशाखी स्नान, ओणम, लोहड़ी, ईद, क्रिसमस आदि उल्लेखनीय पर्वों,उत्सवों और मेलों के साथ–साथ पूरे साल के 365 दिन कोई न कोई उत्सव आयजित होता रहता है। बंगाल का दुर्गा पूजा उत्सव,महाराष्ट्र का गणेश उत्सव, तमिलनाडु का पोंगल उत्सव, बिहार का छट पूजा उत्सव और वृंदावन की कृष्ण जन्माष्टमी देश के विख्यात उत्सव हैं।

भारत में तिथियों के अनुसार देश में अनेक मंदिर उत्सव भी लोकप्रिय हैं। यद्यपि ये पूर्ण रूप से धार्मिक होते हैं पर इनका आकर्षण और स्वरूप इतना भव्य हो गया है कि कई उत्सवों की ख्याति वैश्विक स्तर पर हो गई है। हरिद्वार, इलाहबाद,उज्जैन और नासिक के कुंभ और महाकुंभ, ओडिशा में जगन्नाथ पुरी की रथ यात्रा, पश्चिम बंगाल में मकर संक्रांति पर गंगासागर स्नान, राजस्थान में पुष्कर का कार्तिक पूर्णिमा स्नान और अजमेर में ख्वाजा साहब का उर्स आदि ऐसे ही महत्वपूर्ण पर्व एवं उत्सव हैं। यहां तक की महापुरुषों की जयंतियां, योग और पर्यावरण जैसे अनेक दिवस भी किसी उत्सव से कम नहीं होते हैं। सभी उत्सवों को मनाने की कई परंपराएं हैं, रीति रिवाज हैं जो विभिन्न राज्यों की विशेषताओं का समावेश करते हैं।

भारतीय मेलों, पर्वों और उत्सव की चर्चा करते समय हम इनके उस सौंदर्य पक्ष को नहीं भूल सकते हैं जो कला से जुड़ा है। मसलन संगीत, नृत्य, हस्तकलाएं, प्रदर्शनियां, जनजातीय संस्कृति की झलक आदि। अनेक घरानों के शास्त्रीय संगीत, विभिन्न राज्यों के शास्त्रीय नृत्य, आदिवासियों के अनूठे रंगबिरंगे नृत्य के साथ–साथ देश भर के कारीगरों के हाथों के हुनर से बनी कलात्मक वस्तुएं भारतीय उत्सवों का प्रमुख आकर्षण होते हैं। यही नहीं इसी जमीन से उठ कर हमारी यह सांस्कृतिक कला धरोहर देश के सात समुंदर पार विदेशों में घूम मचा रही है।

मेलों और उत्सवों से जुड़ी भारत की सांस्कृतिक धरोहर में शामिल

हैं देश के किले, महल, मंदिर, गुफाएं, स्थापत्य और शिल्प कला के स्मारक और समुद्र, नदियां, झील, झरने, पहाड़, जंगल तथा रेगिस्तान की प्राकृतिक संपदा। ये सब इतने मनोरम और आकर्षक हैं कि इन्हें देखने बड़ी संख्या में विदेशी और स्वदेशी पर्यटक पहुंचते हैं। देश के उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक हमारी इतनी विशाल और भव्य धरोहर को देखने के लिए अधिक से अधिक पर्यटक भारत आएं, इसी महत्ती ध्येय को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार और प्रांतीय सरकारों ने शनैः–शनैः स्थानीय स्तर पर पर्यटक उत्सवों के आयोजन की परंपरा प्रारंभ की। वर्तमान में हजारों पर्यटक उत्सव हर साल देश भर में विविध परंपराओं के साथ आयोजित किए जाते हैं। इनसे जहां एक ओर पर्यटन को बढ़ावा मिला है वहीं दूसरी ओर कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए मंच भी उपलब्ध हुआ है। ये उत्सव किसी पर्यटन स्थल की लोकप्रियता, समुद्री बीच, संस्कृति, ख्यातनाम कलाकार के नाम से और किसी भी स्थानीय विशेषता के नाम से आयोजित किए जाते हैं। निरंतर प्रयासों के फलस्वरूप अनेक पर्यटन उत्सवों ने वर्तमान में आंचलिक स्वरूप से बाहर निकल कर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित कर ली हैं। यही नहीं इनमें विदेशी कलाकारों ने भी शामिल हो कर इन्हें विश्वव्यापी स्वरूप प्रदान किया है।

प्रस्तुत कृति भारत देश के विभिन्न राज्यों में आयोजित होने वाले ऐसे ही चुनिंदा पर्यटन उत्सवों पर केंद्रित है जो हमारे देश और दुनिया की शान बन चुके हैं और देश के पर्यटन विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका में नजर आते हैं।

इस कृति के लिए प्राक्कथन लेखन के लिए मैं विद्वान एडवोकेट, लेखक एवं पत्रकार अख्तर खान 'अकेला' का तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूँ कि जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय निकाल कर सहयोग प्रदान किया। कृति के निर्माण में मौलिक उपयोगी जानकारी उपलब्ध कराने के लिए पंचकुला से गृहणी मृदुला अग्रवाल, गुरुग्राम से हरियाणा कला परिषद के पूर्व निदेशक अजय कुमार सिंहल, मुंबई से पत्रकार चंद्र कांत शर्मा, लखनऊ से पत्रकार विमल पाठक, देहरादून से पत्रकार राज कमल, मेरठ से सुशील

गुप्ता, उदयपुर से लेखक, पत्रकार एवं लोक संस्कृति मर्मज्ञ पन्नालाल मेघवाल, झालावाड़ से इतिहासकार ललित शर्मा, जोधपुर से लेखक एवं पत्रकार मोहन लाल गुप्ता, जयपुर से लेखक एवं पत्रकार बाल मुकुंद ओझा, और बूंदी से जनसंपर्क कर्मी अर्जुन सिंह हाड़ा का तहे दिल से आभार व्यक्त करता हूं। कोटा से भारतीय रेलवे के सेक्शन इंजीनियर और पर्यटन प्रेमी अनुज कुमार कुच्छल, राजकीय सार्वजनिक मंडल पुस्तकालय के अधीक्षक डॉ. दीपक कुमार श्रीवास्तव, साहित्यकार (समीक्षक और कथाकार) विजय जोशी, साहित्यकार डॉ. कृष्णा कुमारी का महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराने और मार्गदर्शन के लिए कृतज्ञता और साधुवाद ज्ञापित करता हूं। संदर्भ पुस्तकें उपलब्ध कराने के लिए राजकीय सार्वजनिक मंडल पुस्तकालय कोटा की सहायक प्रभारी डॉ.शशि जैन तथा विविध प्रकार उल्लेखनीय सहयोग के लिए कोटा वरिष्ठ पत्रकार के.डी.अब्बासी और इनकी धर्मपत्नी तकसीम बानो तथा विक्की महावर का भी ह्रदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। मैं सलीमुद्दीन काज़ी वरिष्ठ पत्रकार का भी साधुवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने इस कृति की व्यवस्थाओं में अपना सहयोग प्रदान किया।

भारत में पर्यटन विकास को बढ़ावा देने की दृष्टि के लिखी गई यह कृति अपने उद्देश्य में सफल होगी और सभी पाठक वर्ग के लिए उपयोगी होगी ऐसा विश्वास करता हूं। पुस्तक को त्रुटि रहित बनाने का पूरा प्रयास किया गया है,फिर भी किसी त्रुटि के लिए क्षमा प्रार्थी हूं। पाठक ही किसी कृति का सर्वोत्तम निर्णायक होता है। पाठकों के सुझावों का सदैव स्वागत है।

शुभकामनाओं सहित !

डॉ. प्रभात कुमार सिंघल
पर्यटन लेखक

अनुक्रम

(1) आंध्र प्रदेश 1-2

(2) अंडमान निकोबार 3-6

(3) बिहार.....7-11

(4) गोवा..... 12-15

(5) गुजरात 16-21

(6) हरियाणा 22-30

(7) हिमाचल प्रदेश..... 31-39

(8) जम्मू–कश्मीर 40-45

(9) कर्नाटक..... 46-51

(10) केरल 52-53

(11) कुम्भ..... 54-56

(12) लद्दाख 57-62

(13) मध्यप्रदेश..... 63-72

(14) महाराष्ट्र..... 73-80

(15) मणिपुर..... 81-82

(16) नागालैंड 83-87

(17) ओडिशा..... 88-98

(18) पश्चिम बंगाल 99-104

(19) राजस्थान 105-135

(20) तमिलनाडु..... 136-139

(21) त्रिपुरा..... 140-144

(22) उत्तर प्रदेश..... 145-158